NYAYA - THEOLOGY

न्याय का ईश्वर - विचार

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

प्रमाण-शास्त्र के बाद न्याय दर्शन में ईश्वर-विचार महत्वपूर्ण स्थान रखता है।न्याय ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है।ईश्वर के स्वरूप और ईश्वर के अस्तित्व की प्रामाणिकता पर नैयायिकों ने पूर्ण विचार किया है।

न्याय दर्शन में ईश्वर के स्वरूप की विवेचना करते हुए यह बतलाया गया है कि ईश्वर एक चैतन्ययुक्त आत्मा है।इनके अनुसार आत्मा दो प्रकार की होती है - जीवात्मा और परमात्मा । परमात्मा ही ईश्वर कहलाता है जो जीवात्मा से भिन्न है।ईश्वर सभी प्रकार के पूर्णता से युक्त है जबकि जीवात्माअपूर्ण है।ईश्वर का ज्ञान नित्य है एवं वह सभी विषयों का अपरोक्ष ज्ञान रखता है जबकि जीवात्मा का ज्ञान अनित्य, आंशिक और सीमित है।बन्धन और मोक्ष से ईश्वर परे है यह ईश्वर पर लागू नहीं होता जबकि जीवात्मा पहले बन्धन में रहता है बाद में मुक्त होता है।

ईश्वर जगत का सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता है वह दिक, आकाश ,मन तथा आत्मा आदि नित्य परमाणुओं से इस जगत की सृष्टि करता है। वह इस जगत का निमित्त कारण है उपादान नहीं ।इस कारण वह विश्वकर्मा के नाम से भी संबोधित होता है । ईश्वर जगत का पालनकर्ता है ,जगत का अस्तित्व ईश्वर पर ही निर्भर करता है ।जब तक वह चाहता है संसार कायम रहता है। अधर्म की वृद्धि हो जाने पर पुनः संसार की सुव्यवस्था के लिए वाह संसार का संहार करता है। वह देश ,काल तथा अन्य किसी सीमा के अंतर्गत नहीं आता इसलिए वह पूर्णतया स्वतंत्र है ।जीव जो कुछ भी करता है वह ईश्वर के इशारे पर करता है ।अपने संस्कार के अनुसार कर्म करने तथा कर्म के अनुसार फल प्राप्त करने के लिए जीव को ईश्वर ही निर्देश देता है। जिस प्रकार एक दयालु पिता अपने बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्यों में लगाता है उसी प्रकार ईश्वर भी सभी जीवो को कर्म तथा कर्म फल की सुव्यवस्था में रखता है।नैयायिक ईश्वर को अनन्त गुणों से युक्त मानते हैं जिनमें छः गुणों को प्रधान गुण माना गया है - अधिपत्य(Majesty),वीर्य(Almighty),यश(all glorious),श्री(infinitely beautiful),ज्ञान(Knowledge)एवम

वैराग्य(Detachment)।

ईश्वर के स्वरूप को जानने के पश्चात अब प्रश्न यह उठता है कि ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण क्या हैं ?न्याय दर्शन में ईश्वर को प्रमाणित करने के लिये दस प्रमाण दिये गए हैं जिनमें से निम्नलिखित चार प्रमाण प्रमुख हैं : -

1 कारणाश्रित तर्क(Causal Argument)
2 नैतिक तर्क(Moral Argument)
3 वेदों के प्रामाण्य पर आधारित तर्क(The argument based on the authoritativeness of Vedas)
4 श्रुतियों की आप्ततापर आधारित तर्क(Proof based on the Testimony of Shrutis)

1 कारणाश्रित तर्क - यह वैज्ञानिक सत्य है कि प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण होता है जैसे - घट का कारण कुम्भकार है।जितनी सावयव वस्तुएँ हैं सभी के कारण हैं क्योंकि सभी घट की तरह कार्य हैं।दिक,काल आकाश, आत्मा कार्य नहीं हैं क्योंकि ये विभु हैं।इसी तरह क्षिति, जल, अग्नि, वायु और मन भी कार्य नहीं हैं क्योंकि ये अणु तथा निरवयव हैं। जो निरवयव हैं उनके विनाश या सृष्टि का प्रश्न नहीं उठता पर जो सावयव हैं उनके साथ यह प्रश्न उठता है कि इनका कारण क्या है?प्रत्येक सावयव वस्तुओं के निर्माण के लिए दो प्रकार के कारणों की आवश्यकता होती है - उपादान कारण(Material Cause)और निमित्त कारण(Efficient Cause)।इस संदर्भ में मिट्टी के घट का उदाहरण लिया जा सकता है - मिट्टी के घट का उपादान कारण मिट्टी है और निमित्त कारण कुम्भकार है।इस तरह सावयव वस्तुओं का निर्माण किसी निमित्त कारण या कर्ता द्वारा उपादान कारण के संयोग से होता है।पर्वत, समुद्र, सूर्य, चंद्र, तारे, ग्रह और नक्षत्र आदि सावयव हैं जो कई उपादान कारणों के संयोग से बनी हुई हैं।अतः इनका कोई न कोई बुद्धिमान कर्ता अवश्य होगा क्योंकि बिना किसी बुद्धिमान कर्ता के संचालन से इन वस्तुओं के उपादान कारणों में वैसा रूप या आकार नहीं आ सकता जैसा उनमें पाया जाता है साथ ही साथ उसके अन्दर निर्माण की इच्छा हो और जो इसके लिये प्रयत्नशील भी हो।इस प्रकार के कर्ता के समस्त गुण ईश्वर में दिखाई देते।इसप्रकार विश्व के निमित्त कारण के रूप में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है और इसे ही कारणाश्रित तर्क कहा जाता है।

पाश्चात्य दार्शनिक पॉल जाने, हरमन लोटज़े और जेम्स मार्टिनेऔ के ईश्वर सम्बन्धी कारक-मूलक-युक्ति से नैयायिकों की यह युक्ति बहुत कुछ मिलती है।इनके अनुसार भी वस्तु-जगत का निर्माण किसी बुद्धिमान कर्ता के द्वारा ही हो सकता है।

2 नैतिक तर्क - नैयायिकों के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए यह दूसरी युक्ति है।इसे 'अदृष्ट पर आधारित तर्क' भी कहा जाता है।इस युक्ति के मूल में यह प्रश्न उठाया जाता है कि विश्वमें रहने वाले लोगों के भाग्य में अन्तर क्यों है और जो अन्तर है उसका कारण क्या है?कुछ लोग सुखी हैं तो कुछ दु:खी, कुछ बुद्धिमान है तो कुछ मूर्ख, कुछ पूण्य करता हुआ व्यक्ति दु:ख भोग रहा है तो कुछ पाप करता हुआ व्यक्ति सुख में है ,इस तरह की भिन्नता क्यों है और इसका कारण क्या है?कारण नियम के अनुसार प्रत्येक कार्य का कारण होता है। इस नियम के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विश्व में लोगों के भाग्य में जो विषमता है इसका भी कुछ न कुछ कारण अवश्य है।लोगों के जीवन में जो सुख या दु:ख पाये जाते हैं उनका कारण उनके इस जीवन या पूर्व जीवन के कर्म ही हैं।सुकर्मों से सुख और कुकर्मों से दु:ख मिलता है।यह नैतिक कारण-नियम नैतिक क्षेत्र में लागू होता है।

शुभ या अशुभ कर्मों से उत्पन्न पाप या पूण्य के जो भंडार हैं उसे न्याय दर्शनिकों ने अदृष्ट कहा है।इसी अदृष्ट के द्वारा लोगों के वर्तमान और भविष्यत जीवन में सुख दु:ख की प्राप्ति होती है।अदृष्ट अचेतन है।प्रश्न यह उठता है कि अचेतन अदृष्ट कर्मों और उनके फलों में व्यवस्था कैसे ला सकता है ? अत: अदृष्ट के संचालन के लिए एक बुद्धिमान संचालक की आवश्यकता है।अदृष्ट के संचालक ने के रूप में जीवात्मा को नहीं माना जा सकता क्योंकि वह अदृष्ट के सम्बन्ध में वह स्वयं कुछ नहीं जानता।इस प्रकार अदृष्ट के संचालक के रूप में ईश्वर को मानना आवश्यक हो जाता है।सत्य, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होने के कारण ईश्वर अदृष्ट का संचालन कर पाता है।यह युक्ति नैतिकता से सम्बंधित है इसलिए इसे नैतिक युक्ति कहा जाता है।

3 वेदों के प्रामाण्य पर आधारित तर्क - ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए न्याय दर्शन का यह तीसरा प्रमाण है।नैयायिकों के अनुसार वेद एक प्रामाणिक ग्रन्थ है और इसके प्रमाणिकता का कारण ईश्वर है क्योंकि मनुस्यों का ज्ञान सीमित होने के कारण वह इसका रचयिता नहीं हो सकता।वेदों का कर्ता एक ऐसा पुरुष है जो भूत, वर्तमान भविष्य, विभु और अतीन्द्रिय सभी विषयों का अपरोक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकता है।अत: यह कहा जा सकता है कि अन्य धर्म-ग्रन्थों की तरह वेदों की अभिव्यक्ति भी ईश्वर के द्वारा हुई है।

4 श्रुतियों की आप्तता पर आधारित तर्क - यह चौथा प्रमाण है जहाँ नैयायिक , ईश्वर को श्रुति के आधार पर प्रमाणित करते हैं। बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है की परमात्मा ही सबों का स्वामी है, सबो का शासक है, सबों का रक्षक है, सभी प्रकार के पुरस्कारों का दाता भी वही है। श्वेताश्वर उपनिषद में कहा गया है कि सभी विषयों में एक ही ईश्वर निहित है, वह सर्वव्यापी है, सभी विषयों का अंतरतम आत्मा है और सबों का व्यवस्थापक एवं संरक्षक

है ।कौषितकयुपनिषद में कहा गया है की वह सभी आत्माओं का शासक है और संसार का करता है ।भगवदगीता में भी भगवान कहते हैं कि मैं ही विश्व का माता-पिता हूं ,मैं ही इसका प्रतिपोषक हूं और मैं ही इसका अपरिवर्तनशील स्वामी हूँ ।वह फिर कहते हैं की मैं ही सबो की अंतिम गति हूं, भरता हूं ,प्रभु हूं साक्षी हूं, निवास हूं ,शरण हूं ,आधार हूं उत्पत्ति एवं नाश का अपरिवर्तनशील कारण हूं।ये श्रुतियां ईश्वर के अस्तित्व का उल्लेख करती हैं जिससे ईश्वर की सत्ता प्रमाणित होती है।